ISSN : 2395-4132

THE EXPRESSION

An International Multidisciplinary e-Journal

Bimonthly Refereed & Indexed Open Access e-Journal

The Expression Journal

Impact Factor 6.4

Vol. 11 Issue 2 April 2025

Editor-in-Chief : Dr. Bijender Singh

Email : editor@expressionjournal.com

www.expressionjournal.com

The Expression: An International Multidisciplinary e-Journal
(A Peer Reviewed and Indexed Journal with Impact Factor 6.4)
www.expressionjournal.com ISSN: 2395-4132

तकनीकी यगु मेंहिंदी का बदलता स्वरुप: अनतं सभंावनाएंव चनुौतियाँ

श्रीमती वन्द्या श्रीवास्तव
उप प्राचाय
जवाहर नवोदय विद्यालय, मोनाचरो, हैलाकाडंी, असम
डॉ. विनय यादव
असिस्टंट प्रोफ़ेसर (भगूोल), राजकीय महाविद्यालय, बारवाला, पचंकुला

सार लखेन

"निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल,
बिन निज भाषा-ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल।।"

कामकाजी / प्रयोजनमूलक हिंदी तकनीकी शब्दावली से संपन्न विज्ञान, तकनीकी, विधि, संचार एवं विविध नवीन क्षेत्रों में अपने नूतन कलेवर के साथ अपनी कीर्तिपताका फहरा रही है। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के उत्तरोत्तर विकास काल में विभिन्न संचार माध्यमों—टेलीग्राम, ट्विटर, व्हाट्सएप, स्वयं पोर्टल, ई-विद्या चैनल, दीक्षा एप इत्यादि—में अपनी विशिष्ट पैठ बनाती हिंदी ने विश्व फलक पर टाइपिंग एवं तकनीकी शब्दावली संबंधी चुनौतियों पर कंठस्थ, यूनिकोड, गूगल इनपुट, वॉइस टाइपिंग जैसी तकनीकों का प्रयोग कर स्वयं को सरल, सहज, बोधगम्य, सर्वसुलभ एवं आकर्षक प्रस्तुत योग्य बना कर सभी को हतप्रभ कर दिया है। "अपनी भाषा हमें ताक़त देती है।" स्वदेश दीपक जी की यह उक्ति अपनी सत्यता को चरितार्थ करती हुई अपनी हिंदी में—बधाई संदेश हो या शोक संदेश, उपलब्धियों की खुशी हो या निराशा में सांत्वना के चंद अल्फ़ाज़—संक्षिप्ताक्षर नहीं, सहज भावाभिव्यक्ति दिल की गहराइयों में उतर जाती है। ज़रूरत है हिंदी को उसकी चुनौतियों के साथ, बिना किसी हिचकिचाहट के, सरसता के साथ स्वीकार करने की। 'ILILA' (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के माध्यम से भारतीय भाषाएँ सीखें) जैसे मल्टीमीडिया आधारित बुद्धिमान स्व-शिक्षण एप्लिकेशन, राजभाषा प्रसार अभियान के तहत 'TOLIC' का गठन, तथा हिंदी भाषा में विज्ञान और तकनीकी संबंधी मौलिक पुस्तक लेखन हेतु दिया जाने वाला 'राजभाषा गौरव पुरस्कार'—विशेष रूप से प्रेरक का कार्य कर रहे हैं। वो दिन दूर नहीं जब हिंदी अपने मार्ग की चुनौतियों को ही अपना साधन बनाते हुए विश्व में गूँजे—"हमारी भारती, जन जन उतारे आरती"—का साकार रूप बन, देश की गौरवगाथा में चार चाँद लगाएगी।

सकेंत शब्द

तकनीकी युग (भाषा के सन्दर्भ में), नूतन तकनीकी संचार माध्यम और हिंदी का बदलता स्वरूप, अनंत संभावनाएं, चुनौतियाँ, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, डिजिटल भारत में हिंदी की भूमिका.

The Expression: An International Multidisciplinary e-Journal
(A Peer Reviewed and Indexed Journal with Impact Factor 6.4)
www.expressionjournal.com ISSN: 2395-4132

तकनीकी यगु मेंहिंदी का बदलता स्वरुप: अनतं सभंावनाएंव चनुौतियाँ

श्रीमती वन्द्या श्रीवास्तव
उप प्राचायर्
जवाहर नवोदय विद्यालय, मोनाचरो, हैलाकाडंी, असम
डॉ. विनय यादव
असिस्टंट प्रोफ़ेसर (भगूोल), राजकीय महाविद्यालय, बारवाला, पचंकुला

तकनीकी यगु (भाषा के सन्दभर्मेंं)

टेक्निकल शब्द ग्रीक शब्द टेकनो से आया है, जिसका अर्थ है "कला या कौशल।" किसी भी तकनीकी कार्य के लिए कला और कौशल दोनों की आवश्यकता होती है।तकनीकी शब्द वे शब्द होते हैं जिनका विज्ञान, गणित या सामाजिक अध्ययन की पुस्तकों जैसे सूचनात्मक पाठ्यों में विशिष्ट अर्थ होता है। ऐसे शब्दों से संपृक्त हिंदी भाषा प्रयोजनमूलक हिन्दी (Functional Hindi) कहलाती है Iइसे 'कामकाजी हिन्दी' भी कहा जाता है।

भाषा के सन्दर्भ में तकनीकी युग का तात्पर्य संचार क्रांति में तकनीक के बढ़ते प्रयोग से है I जैसे जैसे संचार के साधन तकनीकी प्रगति का पर्याय बन सामान्य जनमानस के लिए सहज सुलभ हो रहे है Iवैसे – वैसे हिंदी भाषा भी संचार के अत्याधुनिक माध्यमों यथा व्हाट्सअप , फेसबुक ,इन्स्टाग्राम,टेलीग्राम इत्यादि के नित नवीन रूप के अनुरूप स्वयं का कायाकल्प कर अपने अस्तित्व को अधिक प्रभावी बना रही हैI सूचना-प्रौद्योगिकी के इस युग में हिंदी सर्वाधिक तेजी से बढ़ती हुई भाषा है Iसूचना-प्रौद्योगिकी के उत्पाद बनानेवाली कंपनियों ने लगातार अपने उत्पादों का हिंदीकरण किया हैI ऑपरेटिंग सिस्टमों के हिंदीकरण और नये सॉफ्टवेयरों से कंप्यूटर पर हिंदी में सूचना लेखन, पठन, वाचन, संग्रहण और संप्रेषण सहज हुआ है. फिर, हिंदीभाषी समाज तेजी से साक्षरता की तरफ बढ़ता समाज है, उसमें हिंदी में सूचना पाने की ललक हैIइसलिए हिंदी भाषा के अखबारों और टीवी चैनलों की संख्या बढ़ रही हैI

हेलो, हाय, थैंक्यू, एसक्यूज़ मी, डिनर, लंच, फिटनेस, ग्लैमर, कांग्रेचुलेशन, नाइस पिक, मीटिंग जैसे जाने कितने अनगिनत अंग्रेजी शब्द हमारी बोलचाल की हिंदी भाषा द्वारा अंगीकार किए जा चुके है। आजकल लगभग 83 प्रतिशत लोग हिंदी और अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग एक साथ करते है I यह एक हाइब्रिड दौर है, मोबाइल चार्ज करना है, ईएमआई जमा करना है, तो अंग्रेजी से गुजरना ही होगा।

हिंदी को आज हम विश्व का नेतृत्व करने वाली भाषा के रूप में देखते हैं। आज दुनिया की आबादी के हिसाब से हर छठा व्यक्ति हिंदी बोलने और समझने लगा है। एक रिपोर्ट के अनुसार भारत में लगभग 77 प्रतिशत लोग हिंदी बोलते और समझते हैं। विश्व में लगभग 50 करोड़ लोग हिंदी बोलते हैं। आधुनिक सर्व सुलभ तकनीक ने हिंदी का विस्तार सात समुंदर पार तक पहुंचा दिया है। हिंदी अपने आप में एक समर्थ भाषा है। जहां अंग्रेजी में मात्र 10 हजार मूल शब्द है, वही हिंदी के मूल शब्दों की संख्या 2 लाख 50 हजार से भी अधिक है।हिंदी कोई क्षेत्रीय

भाषा नहीं है , हिंदी के पीछे विशाल दुनिया है, उसके कई बड़े द्वार हैं, जो दुनिया की तरफ खुलते हैं। तकनीक ने भाषा के विकास में बड़ी भूमिका निभाई है।

आज कम्प्युटर, इंटरनेट आदि में हिन्दी का बखूबी प्रयोग हो रहा है। इसी तरह कई उपग्रह चैनल हिन्दी में प्रसारित कार्यक्रम पूरी दुनिया में पहुँचाते हैं । अत: नई प्रौद्योगिकी के विश्वव्यापी स्वरूप पर आरूढ़ होकर हिन्दी आज विश्वव्यापी बन गयी है ।

नूतन तकनीकी संचार माध्यम और हिंदी का बदलता स्वरुप

सूचना-प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में होने वाले अधुनातन प्रयोगों से दिन प्रतिदिन नए जन संचार माध्यमों का विकसित रूप सोशल मीडिया के अभिन्न अंग के रूप में मानव मन को लुभाता रहता है Iजन संचार माध्यमों यथा ट्वीटर, यू ट्यूब ,व्हाट्सअप, एफएम चैनल , इन्स्टाग्राम , टेलीग्राम , फेसबुक , वीडिओ कांफ्रेंसिंग , ब्लॉग , ई – मेल,पैम्फलेटइत्यादि के साथ ही भारत सरकार द्वारा भी हिंदी के प्रचार प्रसार के लिए किए जाने वाले प्रयासों का योगदान उल्लेखनीय है I

मेटा एआई

मेटा एआई (पूर्व में फेसबुक आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस रिसर्च) मेटा प्लेटफ़ॉर्म (पूर्व में फेसबुक) का एक शोध प्रभाग है जो कृत्रिम बुद्धिमत्ता और संवर्धित और कृत्रिम वास्तविकता तकनीक विकसित करता है। मेटा एआई खुद को एक अकादमिक शोध प्रयोगशाला मानता है, जो एआई समुदाय के लिए ज्ञान उत्पन्न करने पर केंद्रित हैIमेटा के प्रोडक्ट्स और सर्विसेज में फेसबुक, मैसेंजर, फेसबुक वॉच और फेसबुक पोर्टल शामिल हैं

व्हाट्सअप

व्हाट्सऐप मेसेंजर (अंग्रेज़ी: WhatsApp Messenger[1] व्हॉट्सॅप् मॅसन्जर्) या व्हाट्सऐप एक प्रकार का त्वरित सन्देश भेजने और प्राप्त करने वाला मोबाइल ऐप है, जिसे अमेरिकी कंपनी, मेटा ने ख़रीदा है। इसमें लोग अपने मोबाईल के द्वारा पाठ्य संदेश के साथ साथ आवाज, छवि और जी पी एस के द्वारा अपना पता भी भेज सकते हैं। इसके द्वारा वॉइस और विडिओ कौल भी किया जा सकता है, जिस में इन्टरनेट का डेटा इस्तेमाल होता है।

फेसबुक

फेसबुक एक सोशल नेटवर्किंग साइट है जो आपके लिए ऑनलाइन परिवार और दोस्तों से जुड़ना और शेयर करना आसान बनाती है। मूल रूप से कॉलेज के छात्रों के लिए डिज़ाइन किया गया, फेसबुक 2004 में मार्क जुकरबर्ग द्वारा बनाया गया था

इन्स्टाग्राम

इन्स्टाग्राम एक मोबाइल, डेस्कटॉप और इंटरनेट-आधारित फोटो-साझाकरण एप्लिकेशन है जो उपयोगकर्ताओं को फोटो या वीडियो को सार्वजनिक रूप से या निजी तौर पर साझा करने की अनुमति देता है। इसकी स्थापना केविन सिस्ट्रॉम और माइक क्रेगर के द्वारा 2010 में की गई थी I

इंस्टाग्राम पर आज पंजीकृत सदस्य अनगिनत संख्या में तस्वीर और वीडियो साझा कर सकते हैं जिसमें वे फिल्टर भी बदल सकते हैं। साथ ही इन चित्रों के साथ अपना लोकेशन यानी स्थिति भी जोड़ सकते हैं। इसके अलावा जैसे ट्विटर और youtube में हैश टैग जोड़े जाते हैं वैसे ही इस में भी हैशटैग लगाने का विकल्प होता है।

X (ट्विटर)

X(ट्विटर) पर, पंजीकृत उपयोगकर्ता टेक्स्ट, चित्र और वीडियो पोस्ट कर सकते हैं।उपयोगकर्ता पोस्ट (ट्वीट), लाइक, रीपोस्ट (या रीट्वीट), टिप्पणी और उद्धरण पोस्ट कर सकते हैं, और अन्य पंजीकृत उपयोगकर्ताओं को सीधे संदेश भेज सकते हैं। उपयोगकर्ता ट्विटर के साथ ब्राउज़र या मोबाइल फ्रंटएंड सॉफ़्टवेयर के माध्यम से, या प्रोग्रामेटिक रूप से इसके एप्लिकेशन प्रोग्रामिंग इंटरफेस (एपीआई) के माध्यम से बातचीत करते हैं।

X एक अद्भुत प्लेटफ़ॉर्म है जो व्यक्तिगत ट्वीट के लिए सीमित संख्या में वर्णों (280 वर्णों तक) का उपयोग करके दुनिया भर के लोगों को जोड़ सकता है। इस प्लेटफ़ॉर्म के साथ, आप वैश्विक स्तर पर विचारों को तेज़ी से, कुशलतापूर्वक और प्रभावी ढंग से संप्रेषित कर सकते हैं।

ब्लॉग

ब्लॉगएक प्रकार की वेबसाइट है, जो मुख्य रूप से लिखित सामग्री पर केंद्रित होती है, जिसे ब्लॉग पोस्ट भी कहा जाता है।मूल रूप से, ब्लॉगिंग वास्तव में बहुत सरल है। सबसे पहले एक ब्लॉगर एक वेबसाइट बनाता है। फिर वे उस वेबसाइट को अपने पाठकों के लिए आकर्षक दिखने के लिए डिज़ाइन करते हैं और फिर वे अपनी वेबसाइट पर लेख ('ब्लॉग पोस्ट') लिखते और प्रकाशित करते हैं।

पॉडकास्ट

पॉडकास्ट एक डिजिटल माध्यम है जिसमें ऑडियो (या वीडियो) एपिसोड होते हैं जो किसी विशिष्ट विषय से संबंधित होते हैं । पॉडकास्ट से तात्पर्य एक मीडिया संचिका से है जो कि इंटरनेट पर फीड के द्वारा प्रसारित की जाती है जिसे कि कंप्यूटर तथा पोर्टेबल मीडिया प्लेयरों जैसे आईपॉड तथा स्मार्टफोन आदि द्वारा चलाया जा सकता है। इस प्रक्रिया को पॉडकास्टिंग कहा जाता है। पॉडकास्ट बनाने तथा प्रसारित करने वाले को पॉडकास्टर कहा जाता है।

पॉडकास्ट एक डिजिटल ऑडियो फाइल है, जिसे इंटरनेट के माध्यम से डाउनलोड या स्ट्रीम किया जा सकता है। यह आमतौर पर एक श्रृंखला के रूप में प्रस्तुत किया जाता है, जिसमें विभिन्न एपिसोड होते हैं। श्रोता इसे अपने सुविधानुसार सुन सकते हैं, चाहे वह यात्रा कर रहे हों, व्यायाम कर रहे हों, या आराम कर रहे हों।

टेलीग्राम

टेलीग्राम मेसेंजर विश्व स्तर पर सुलभ फ्रीमियम, क्रॉसप्लेटफ़ॉर्म-, गुप्तलिखित, क्लाउडआधारित- और केन्द्रीकृत त्वरित सन्देश सेवा है। अनुप्रयोग वैकल्पिक अन्त पर्यन्त अन्त गुप्तलिखित संवाद भी प्रदान करता है, जिसे गुप्त संवाद और वीडियो दूरभाष,वीओआईपी, संचिका साझाकरण और कई अन्य सुविधाओं के रूप में जाना जाता है। इसे 14 अगस्त 2013 को iOS के लिए और 20 अक्टूबर 2013 को ऐन्ड्रॉइड हेतु आरम्भ किया गया था।

सोशल मीडिया ऐप्स की तरह टेलीग्राम भी कॉल करने की सुविधा देता है। अन्य ऐप्स के मुकाबले इसका यूजर इंटरफेस काफी सिंपल है। इसमें हम फोटोस,वीडियो,फाइल,लोकेशन,कांटेक्ट या कोई मीडिया भी भेज सकते हैं। इसके जरिये 1.5 GB तक की फाइल्स को शेयर कर सकते हैं।टेलीग्राम का व्यापक रूप से शिक्षा और परीक्षा तैयारी चैनलों द्वारा उपयोग किया जाता है।

वीडियो कालिंग

ऑडियो और वीडियो दोनों को प्रेषित और प्राप्त करने के लिए स्मार्टफोन, मोबाइल डिवाइस, वेबकैम आदि का उपयोग करके एक या एक से अधिक लोगों के साथ संवाद करने का कार्यवीडियो कालिंग से संभव है I

विडियो कॉन्फ्रेंसिंग

वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग एक प्रौद्योगिकी-सक्षम प्रकार की मीटिंग है, जहाँ दो या दो से अधिक लोग, अलग-अलग भौगोलिक स्थानों पर, संवाद और सहयोग के उद्देश्य से इंटरनेट के माध्यम से लाइव विज़ुअल कॉन्फ्रेंस आयोजित करते हैं।

प्रसार भारती

प्रसार भारती, भारत का लोक सेवा प्रसारक प्रसार भारती अधिनियम, 1990 के तहत स्थापित किया गया था, और यह 23 नवंबर, 1997 को अस्तित्व में आया। इसका उद्देश्य लोक प्रसारण सेवाओं को संगठित और संचालित करना - सूचना देना, शिक्षा और मनोरंजन प्रदान करने के साथ-साथ रेडियो और टेलीविज़न पर प्रसारण का संतुलित विकास सुनिश्चित करना है।

प्रसार भारती (जिसे पीबी के नाम से भी जाना जाता है) (अनुवाद: भारतीय प्रसारण निगम) भारत का सरकारी स्वामित्व वाला सार्वजनिक प्रसारणकर्ता है, जिसका मुख्यालय नई दिल्ली, भारत में है। यह संसद के एक अधिनियम द्वारा स्थापित एक वैधानिक स्वायत्त निकाय है ।

प्रसार भारती (ब्रॉडकास्टिंग कारपोरेशन ऑफ़ इण्डिया के नाम से भी जानते हैं I भारत की एक सार्वजनिक प्रसारण संस्था है। इसमें मुख्य रूप से दूरदर्शन एवं आकाशवाणी शामिल हैं।

रेडियो

रेडियो में एफएम चैनलों ने सामान्य जनता के मध्य अपनी पकड़ मजबूत कर ली है I

टेलीवीजन

लोकप्रिय मनोरंजनात्मक , ज्ञानात्मक माध्यम है I अपने धारावाहिकों से घर - घर तक इसकी पहुँच है I हिंदी समाचार चैनलों ने हिंदी पत्रकारिता को एक नया आयाम दिया है I

कंप्यूटर की भाषा बनने के बाद से हिंदी उत्तरोत्तर प्रगति पथ पर गतिमान है Iगूगल इनपुट ,यूनिकोड, गूगल ट्रांसलेट , कंठस्थ तथा वाइस टाइपिंग ने तो हिंदी के पैरों में मानो पंख ही लगा दिए है I

अनंत संभावनाएं

हिंदी विश्व की सबसे अधिक लोकप्रिय , सुनी तथा समझी जाने वाली भाषा के रूप में प्रतिष्ठित हो चुकी है Iहिंदी भाषा के प्रचार – प्रसार के लिए भारत सरकार केकार्य उल्लेखनीय हैं -

- राजभाषा आयोग

संविधान के अनुच्छेद 344 (1) में राष्ट्रपति को राजभाषा आयोग का गठन करने का अधिकार दिया गया हैIराजभाषा आयोग के पहले अध्यक्ष बाल गंगाधर खेर थे. राष्ट्रपति राजेंद्र प्रसाद ने 7 जून, 1955 को उनका नियुक्त किया था. इस आयोग को 'खेर आयोग' के नाम से भी जाना जाता है. इस आयोग ने 31 जुलाई, 1956 को अपनी रिपोर्ट राष्ट्रपति को सौंपी थीI जिसमें वैज्ञानिक, प्रशासनिक, और कानूनी साहित्य से जुड़े हिन्दी शब्दावली तैयार करने के लिए और अंग्रेज़ी की किताबों का हिन्दी में अनुवाद करने के लिए एक स्थायी आयोग बनाए जाने की अनुशंसा की गई I.

वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग का गठन संविधान के अनुच्छेद 344 के खण्ड (4) के परंतु के अंतर्गत भारत सरकार के एक संकल्प के द्वारा निम्नलिखित उद्देश्यों के साथ 21 दिसम्बर, 1960 में किया गया था- हिन्दी और सभी भारतीय भाषाओं में वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दों का विकास करना और परिभाषित करना; शब्दावलियों को प्रकाशित करवाना I

राजभाषा विभाग(भारत सरकार) द्वारा किए जा रहे प्रयास

- नराकास(नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति) का गठन

राजभाषा विभाग, गृहमंत्रालय के दिनांक 22.11.1976 के का.ज्ञा.सं. 1/14011/12/76-रा.भा.(का-1) के अनुसार देश के उन सभी नगरों में जहां केंद्रीय सरकार के 10 या इससे अधिक कार्यालय हों, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का गठन किया जा सकता है । समिति का गठन राजभाषा विभाग के क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालयों से प्राप्त प्रस्तावों के आधार पर भारत सरकार के सचिव(राजभाषा) की अनुमति से किया जाता है ।

इन समितियों के गठन का प्रमुख उद्देश्य केंद्रीय सरकार के कार्यालयों/उपक्रमों/बैंकों आदि में राजभाषा नीति के कार्यान्वयन की समीक्षा करना, इसे बढ़ावा देना और इसके मार्ग में आई कठिनाइयों को दूर करना है ।

- हिन्दी शब्द सिंधु - एक बृहत् एवं समावेशी शब्दकोश का लोकार्पण

- 'कंठस्थ 2.0 (अनुवाद टूल) का लोकार्पण

ट्रांसलेशन मेमोरी पर आधारित इस सिस्टम की मुख्य विशेषता यह है कि इसमें अनुवादक पूर्व में किए गए अनुवाद को किसी नई फाइल के अनुवाद के लिए पुन:प्रयोग कर सकता है। यदि अनुवाद की नई फाइल का वाक्य टी.एम. के डेटाबेस से पूर्णत: अथवा आंशिक रूप से मिल ता है तो यह सिस्टम उस वाक्य के अनुवाद को टी.एम. से लाता है।अनुवाद के लिए सिस्टम का निरंतर प्रयोग करते रहने से टी.एम. का डेटा बेस उतरोत्तर बढ़ता रहता है।

- ई पत्रिका की अनिवार्यत :

- LILAहिंदी प्रशिक्षण कार्यक्रम

- राजभाषा गौरव पुरस्कार

यह पुरस्कार केवल भारतीय नागरिक को ही दिया जाता है। जिसने भी हिन्दी भाषा में विज्ञान और तकनीकी के विषय में कोई पुस्तक लिखा हो। इसका उद्देश्य हिन्दी भाषा को विज्ञान और तकनीकी के क्षेत्र में आगे बढ़ाना है।

- राजभाषा कीर्ति पुरस्कार संकल्प
- हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन
- ई विद्या चैनल

उक्त प्रयासों द्वारा भारत सरकार सामान्य जन मानस के सहयोग से हिंदी के लिए संभावनाओं के अनंत द्वार खोल रही है I
भारतीय सिनेमा और उसके कर्णप्रिय संगीत पर तो समूचा विश्व झूम उठता है I अनगिनत अहिन्दी भाषी लोग तो सिनेमा के लिए ही सिनेमा से ही हिंदी बोलना और समझाना सीख रहे है I टेलीविजन पर प्रसारित हिंदी धारावाहिकों के महत्त्व को भी नाकारा नहीं जा सकता है I प्रसन्नता का विषय है कि आज के जन नेता हो या उच्च अधिकारी सभी ने हिंदी को सहर्ष सम्प्रेषण का सशक्त माध्यम स्वीकार कर लिया है I जनप्रतिनिधिभारत ही नहीं विदेशों में भी गर्व से जन सभा को हिंदी भाषा में संबोधित कर अपनी राजभाषा का मान बढ़ा रहे है I
निश्चय ही इस तरह की ईमानदार कोशिशों से ही हिंदी मान – सम्मान की अधिकारिणी बन सही मायनों में राजभाषा के पद पर प्रतिष्ठित होगी I

चुनौतियाँ

माना कि पाश्चात्य सभ्यता की चकाचौंध में अंग्रेजियत का चढ़ता खुमार , खोखली प्रदर्शनकारी प्रवृत्तियां हिंदी की सबसे बड़ी चुनौती है Iअंग्रेजी के शब्दों के बढ़ते अतिक्रमण ने हिंदी को जो नया स्वरुप हिंगलिश प्रदान किया है यथा –MERI BHASHA MERA ABHIMAAN . वो भाषा के प्रसार के लिए तो उचित है किन्तु हिंदी के मौलिक चिंतन के लिए चिंता का विषय है I आज के सुधीजनों का तथा साहित्यकारों का यह नैतिक कर्तव्य है कि वे भाषा की मौलिकता और मानकता को उसके मूलरूप में बनाए रखने में अपना सार्थक योगदान प्रदान करें I

निष्कर्ष -

प्रयोजनमूलक हिंदी के माध्यम से हिंदी की तकनीति युग में विशिष्ट पहचान बनी है I संचार माध्यमों तथा सोशल मीडिया में हिंदी अपनी अल्हड़ता और गाम्भीर्य दोनों रूपों में अविरल रूप से प्रगति पथ पर अग्रसित है I सरकार द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार –प्रसार हेतु किए जा रहे प्रयास निश्चय ही सराहनीय है Iशोध पत्र की टाइप की हुई मूल प्रति , ऑनलाइन माध्यम से प्रस्तुति डिजिटल दुनिया में अपनी बेतहर उपस्थिति का प्रत्यक्ष प्रमाण है Iआज विश्व हिंदी सम्मेलनों में हिंदी अपनी कीर्ति पताका फहरा कर जय हिन्द, जय हिंदी , जय हिन्दुस्तानका उद्घोष कर भारत देश का मान – अभिमान बन स्वरम पर मंत्रमुग्ध हो इतरा रही है I

सन्दर्भ ग्रन्थ

- समाचार पत्र का नाम 'उत्तम हिन्दू' में प्रकाशित डॉ नन्दकिशोर साह के लेख से साभार I
- ‘अभिव्यक्ति और माध्यम’ NCERT Book
- नए जन-संचार माध्यम और हिंदी
- विकिपीडिया : संचार साधन (इंटरनेट द्वारा)